pp पवन प्रवाह
लखनऊ से प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक
website: www.pawanprawah.com
डाक पंजीयन संख्या GPO LW/NP-106/2015-17
मूल्य : तीन रुपये पृष्ठ-16
सत्य का प्रवाह सतत् प्रवाह
e-mail-pawanprawah@gmail.com
वर्ष 03 अंक 15 लखनऊ। सोमवार 02 से 08 जनवरी-2017

नहीं चेते, तो होगा 'पृथ्वी' का अस्तित्व खतरे में!

लेखक डॉ. भरत राज सिंह
स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज के महानिदेशक एवं वैदिक विज्ञान केन्द्र के अध्यक्ष है

विश्व के समस्त जनमानस को अब मालूम हो गया है की पृथ्वी का तापमान लगातार बढ़ रहा है। इसी कारण उत्तरी व दक्षिणी ध्रुव की बर्फ तेजी से पिघल रही है। वैज्ञानिकों एंव पर्यावरणविदों के लिए यह गम्भीर चिंता का विषय है। पर्यावरण की एक रिपोर्ट के अनुसार यदि मनुष्य द्वारा प्राकृतिक सम्पदा का दोहन इसी तरह कुछ दसक तक और जारी रहा तो अमेरिका, कनाडा व यूनाइटेड किंगडम के अधिकांश शहर जैसे न्यूयार्क, ब्रिटेन आदि अगले दसक अथवा मात्र कुछ वर्षों में ही जल्मंग्न हो जायेंगे। भारत में उत्तराखंड व कश्मीर में विगत वर्षों में आई भीषण आपदा ने तबाही के संकेत दे दिए है। यदि मनुष्य नहीं चेता तो पृथ्वी पर जीवन समाप्त होने से इंकार नहीं किया जा सकता है। विश्व के समस्त देश, पिछले वर्ष पेरिस समिति में पर्यावरण संरक्षण पर गहन चिन्तन व विचारविमर्श किया और कार्बन उत्सर्जन में कम से कम 2 प्रतिशत लेने का संकल्प लिया जिसमें हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी का महत्वपूर्ण योगदान रहा और उन्होंने आवाहन किया की ऐसा करना पृथ्वी पर जनजीवन बचाने के लिए अत्यन्त आवश्यक है तथा भारतवर्ष इसमें आगे आने का संकलप लेता है। इसके लिए पूरे विश्व में विभिन्न प्रकार के आयोजन किये जाए तथा मनुष्य जाति को प्राकृतिक सम्पदा के दोहन में रोकने के प्रति आगाह किया जाए। वनो व प्राकृतिक सुन्दरता को नष्ट होने से बचाया जाए, जिससे मानव व जीव-जन्तुओं के जीवन की सुरक्षा हो सके।

वर्तमान में यह देखा जा रहा है कि पूरे विश्व में प्राकृतिक आपदाओं के साथ-साथ पर्यावरण में तेजी से हो रहे बदलाव ने सभी को सोचने पर मजबूर कर दिया है कि वह विभिन्न आयोजनों के माध्यम से पौधारोपण, कचरों का निस्तारण व नष्ट करना, सोलर एनर्जी व वायु एनर्जी का अधिक से अधिक प्रयोग करे। एलईडी बल्ब व ट्यूब राड का अधिक से अधिक प्रयोग कर एनर्जी की बचत करें।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी लोगों से स्वच्छ भारत के निर्माण के लिए सहयोग देने के लिए अपने घर और अपने शहर से इसकी शुरूआत करने की अपील की है। हमें पहाड़ों पर फैल रहे कचरों एवं उद्योगीकरण के प्रति भी सचेत होने की जरूरत है। उत्तराखंड के केदारनाथ में आई आपदा में हजारो लोगों को भी अपने जान गवांनी पड़ी थी। पिछले माह कश्मीर में आई भीषण बाढ़ में भी हजारों लोगों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा। तेजी से बढ़ती जनसंख्या और वन आच्छादित क्षेत्रों के क्षरण के कारण पृथ्वी पर पर्यावरण असंतुलन की स्थिति उत्पन्न हो गई है। ऐसे में हमें विकास के क्रम में पर्यावरण संरक्षण को ध्यान में रखकर आगे बढ़ने की जरूरत है, जिससे भावी संतति के भविष्य को संरक्षित और सुरक्षित किया जा सके। यदि मनुष्य पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता नहीं दिखाता है तो आने वाले समय में जैस उत्तरी ध्रुव की बर्फ तेजी से पिघल रही है और पूरे विश्व में बर्फबारी का मौसम आ गया है इसी प्रकार वैश्विक तापमान में 2 डिग्री सेंटीग्रड तापमान और बढ़ने से दक्षिणी ध्रुव पर मौजूद बर्फ चट्टाने भी पिघलनी शुरू हो जाएंगी। जिससे लगभग 1530 अरब टन बर्फ समुद्र में समाहित हो जायेगी और शताब्दी के अंत तक समुद्र के पानी की सतह में 20 फुट से 30 फुट तक बढ़ोत्तरी होने से नकारा नही जा सकता है। इतना ही नहीं इसका दुष्प्रभाव यह भी होगा की पृथ्वी जो आज 23.43 डिग्री पर घूम रही है वह उत्तरी एवं दक्षिणी ध्रुव पर बर्फ हट जाने से भार में कमी होने से धुरी में बदलाव आ सकता है। ऐसे में पृथ्वी ब्रह्माण्ड में स्वतंत्र रूप विचरण करते हुए उसकी गति धीमी पड़ जायेगी व पृथ्वी पर आकस्मिक दुर्घटना के साथ उसके नष्ट होने की प्रबल संभावना उत्पन्न हो सकती है। अतः विश्व के समस्त पर्यावरण में वैज्ञानिक व जनमानस को आगाह करते हुए आशा की जाती है कि इसमे कार्बन उत्सर्जन में अधिक से अधिक कमी कर पृथ्वी व जन-जीवन को प्रकृति के साथ जोड़ने का प्रयास किया जाए तथा आने वाले नव वर्ष 2017 की शुभकामनाओं के साथ-साथ सृष्टि के अस्तित्व के खतरे को बचाने का संकल्प लिया जाए।